

सम्मूढ़ पीड़िका स्त्री. (तत्.) एक शिशन रोग।

सम्मूर्च्छन पुं. (तत्.) मूर्च्छा, बेहोशी घना होने, फैलने, बढ़ने की क्रिया ऊँचाई, पूर्ण व्याप्ति।

सम्मृष्ट वि. (तत्.) 1. साफ किया हुआ 2. छाना हुआ 3 अच्छी तरह झाड़ा-बुहारा हुआ।

सम्मयेय वि. (तत्.) अंक. 1. जिसे समान मापदंड से मापा जा सके 2. वे संख्याएँ जो किसी एक ही परिमेय संख्या से विभाज्य हो।

सम्मेलन पुं. (तत्.) 1. परस्पर मिलन, एकत्र होना, जमावड़ा, जमघट 2. मेल 3. सम्मिश्रण, मिलाप, संगम 4. किसी विषय या अनेक विषयों पर विचार करने के लिए की गई सभा 5. विचारों, तथ्यों अथवा प्रविधियों के आदान-प्रदान के लिए विद्वानों, विद्यार्थियों अथवा सामान्य जन के मध्य होने वाली सभा।

सम्मोद पुं. (तत्.) 1. प्रीति, प्रसन्नता, खुशी, आनंद 2. गंध।

सम्मोह पुं. (तत्.) 1. मोह, विमोहन 2. मूर्च्छा, संज्ञाहीनता, बेहोशी 3. मूर्खता, अज्ञान 4. घबड़ाहट, व्याकुलता 5. एक विशेष ग्रहयोग (ज्यों.) 6. धोखा, भ्रम 7. एक छंद का नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक गुरु होता है।

सम्मोहक वि. (तत्.) 1. बेहोश, संज्ञाहीन करने वाला 2. वश में करने वाला 3. सम्मोहन करने वाला, मोहने वाला 4. आकर्षक, अति सुंदर।

सम्मोहन पुं. (तत्.) 1. मोहने की क्रिया, वशीकरण 2. कामदेव के पाँच बाणों में से एक बाण 3. एक पौराणिक अस्त्र का नाम 4. सम्मोहित करना।

सम्मोहा पुं. (तद्.) एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण और 2 गुरु के योग से पाँच वर्ण होते हैं।

सम्मोहित वि. (तत्.) 1. मुग्ध, वश में किया हुआ 2. संज्ञाहीन किया हुआ, मूर्च्छित किया हुआ, बेहोश किया हुआ।

सम्मोहिनी स्त्री. (तत्.) मनुष्यों को आकर्षित करने वाली एक प्रकार की माया।

सम्यक् वि. (तत्.) 1. उपयुक्त, उचित, ठीक 2. संपूर्ण, समग्र, समस्त 3. शुद्ध, सही 4. भली-भांति 5. समुदाय, समूह।

सम्यक् चरित्र पुं. (तत्.) सद्ध चरित्र, सदाचारी जैनधर्म के अनुसार धर्मत्रय में से एक धर्म।

सम्यक् ज्ञान पुं. (तत्.) 1. उचित ज्ञान, सही ज्ञान, यथार्थ ज्ञान 2. आत्मस्वरूप का ज्ञान जैनियों के अनुसार धर्मत्रय में से एक धर्म।

सम्यक् संबुद्ध पुं. (तत्.) जिसे पूरा ज्ञान प्राप्त हो गया हो, गौतम बुद्ध का एक नाम।

सम्यक् समाधि स्त्री. (तत्.) 1. सही समाधि 2. बौद्ध धर्म में अष्टांग मार्ग में से एक।

समाजना स.क्रि. (तत्.) 1. किसी स्थान पर प्रतिष्ठित होना 2. विराजमान होना।

समाजी स्त्री. (तत्.) 1. सम्राट की पत्नी 2. साम्राज्य की स्वामिनी 3. साम्राज्य के शासन सूत्र का संचालन करने वाली स्त्री।

सम्राट पुं. (तत्.) 1. साम्राज्य का स्वामी, राजाधिराज, राजेश्वर प्राचीन भारत में जो राजा राजसूय यज्ञ कर लेता था उसे सम्राट की पदवी प्राप्त हो जाती है।

सयंतर पुं. (तत्.) 1. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश 2. उस देश का निवासी।

सयत्न क्रि.वि. (तत्.) यत्नपूर्वक, प्रयत्नपूर्वक वि. प्रयत्नशील, प्रयासशील।

सयानपन पुं. (तद्.) चतुराई, चतुरता, सजगता, होशियारी, चालाकी।

सयाना पुं. (तद्.) 1. प्रौढ़ व्यक्ति, वयस्क वि. 2. बुद्धिमान, चालाक, चतुर पुं. 3. झाड़-फूँक करने वाला व्यक्ति, ओझा वि. 4. कपटी, धूर्त।

सयानाचारी स्त्री. (तद्.) गाँव के मुखिया को किसानों द्वारा दिया जाने वाला नजराना, भेंट,